IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 22, Issue 9, Ver. 1 (September. 2017) PP 73-76
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

महादेवी वर्मा की हिन्दी साहित्यि में भूमिका

डॉ. बीना शर्मा
व्याख्याता , हिंदी विभाग , विश्व भारती डिग्री कॉलेज , सीकर , राजस्थान

शोध सारांश

हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार रही है । उन्होंने काव्य के साथ कहानियाँ, रेखाचित्र, निबंध लिखे हैं। उन्हें 'आधुनिक मीरा' के नाम से भी पहचाना जाता है। महादेवी का हिंदी साहित्य को बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी ने समाज जीवन के साथ भारत वर्ष की ग्रामीण जनता के दुख दर्द का चित्रण किया है। छायावाद और रहस्यवाद के क्षेत्र में उनका नाम अग्रणी है। उन्होंने ने साहित्य के अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र में उज्ज्वल कार्य किया है । उनका व्यक्तित्व विविध पहलुओं से सजा हुआ था। जिसमें भावुक स्वभाव की छवि काफी प्रभावकारी रही है। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर भी रहा है। प्रकृति, परिवार, समाज तथा समाज का शोषित, पीड़ित, सर्वहारा वर्ग आदि द्वारा प्रेरित होकर साहित्य सृजन किया है। दीन–हीन, पीडित गरिबों, जर्जर परंपरा में जकडी नारियों और असहाय विवश मानवों का कल्याण करने के लिए उनका मन सदैव संवेदनशील रहा हैं।

वह महात्मा गांधीजी के समाज सेवा कार्य से बहुत प्रभावित थी उन्होंने प्रधानाचार्य पद पर काम करते समय समाजसेवा तथा पशु–पक्षियों के जीवन के साथ अपना अटूट संबंध स्थापित किया था। उनके साहित्यिक, शैक्षिक तथा सामाजिक योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया। उनके 'यामा' काव्य संग्रह को साहित्य का 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार पुरस्कृत किया है। महादेवी वर्मा के 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' रेखाचित्रों में विभिन्न वर्ग, आयु एवं समुदाय के पात्र है 'रामा', 'घीसा', अंधा अलोपी', 'बदलू', चीनी फेरीवाला', जंगबहादुर', 'ठकुरी बाबा' आदि पुरुष पात्रों के रेखाचित्र हैं । 'भाभी', 'बिंदा', 'सबिया', 'बिट्टो', 'बालिका माँ', 'अभागी स्त्री', 'भक्तिन', 'लछमा', 'मुन्नु की माँ', 'बिबिया', 'गुँगियाँ' आदि नारी पात्र हैं।

जीवन परिचय :–

महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश के एक प्रतिष्ठित परिवार में 26 मार्च सन 1960 को सुबह आठ बजे होली के शुभ त्यौहार के दिन हुआ। उनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा इंदौर के दिल्ली कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में कार्य करते थे और उनकी माता हेम रानी देवी एक विदुषी एवं धर्म परायण महिला थी। उनके नाना भी कवि थे जो कि बृज भाषा में कविता लिखते थे तथा उनकी प्रवृत्ति भी बेहद धार्मिक थी।

महादेवी जी की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में आरंभ हुई। इसके साथ ही उनके घर पर एक पंडित, एक चित्र शिक्षक, एक संगीत शिक्षक व एक मौलवी भी उनको शिक्षा देने के लिए जाते थे। मात्र 9 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा के साथ कर दिया गया पर उस विवाह को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया।

मात्र सात या आठ वर्ष की आयु से ही महादेवी जी ने कवितायें रचना प्रारम्भ कर दी थीं।

"ठंडे पानी से नहलातीं,

ठंडा चंदन इन्हें लगातीं,

इनका भोग हमें दे जातीं,

फिर भी कभी नहीं बोले हैं।

माँ के ठाकुर जी भोले हैं।"

सरल शब्दों में अपनी भावनाओं को कविता के माध्यम से व्यक्त करना महादेवी जी को बाल्यावस्था से ही आ गया था।

महादेवी जी ने बचपन से करीब सात वर्ष की आयु से ही बृज भाषा में कविताएं लिखना आरंभ किया था और ग्यारह वर्ष की आयु तक आते इन्होंने खड़ी बोली में भी रचनाएं लिखनी प्रारंभ कर दी थी। खड़ी बोली में रचनाएं लिखना इन्होंने सरस्वती पत्रिका की प्रेरणा से शुरू किया था।

नीहार, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा, प्रथम आयाम, अग्निरेखा, सप्तवर्णा और सांध्यगीत इनके काव्य संग्रह हैं। करुणा एवं भावुकता उनकी रचनाओं के प्रमुख अंग हैं इसलिए उन्हें "पीड़ा की गायिका" के नाम से भी जाना जाता है।

साहित्य जगत को अपनी लेखनी से समृद्ध करने वाली लेखिका महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य के छायावाद काल के प्रमुख 4 स्तम्भों में से एक के रूप में अमर हैं। हिंदी साहित्य में उनकी एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में पहचान है और छायावादी काव्य के विकास में इनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

1916 के आसपास हिंदी में कल्पनापूर्ण और भावुक कविताओं का दौर आया जिनकी भाषा,छंद, अलंकार और यहाँ तक कि शैली का भी पुरानी कविताओं से कोई मेल नहीं होने के कारण हिंदी साहित्य जगत के आलोचकों ने इसे छायावाद या छायावादी कविता का नाम दिया। आधुनिक हिंदी कविता की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं की उपलब्धता इस काल में मिलती है।

महादेवी जी को हिंदी की सबसे सशक्त कवयित्री होने के कारण आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। भक्ति काल में जो स्थान भगवान श्रीकृष्ण की परम भक्त मीरा को प्राप्त हुआ है आधुनिक काल में वह स्थान महादेवी वर्मा को मिला है। जिस तरह से मीरा अपने गिरधर गोपाल के प्रति तन–मन–धन से समर्पित रही उसी तरह से महादेवी जी ने साहित्य साधना को अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

महाकवि निराला ने तो उन्हें "हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती" भी कहा है। महादेवी जी का कला पक्ष भी भाव पक्ष जैसा ही सुंदर है। उनकी कविताओं की भाषा अत्यंत मधुर एवं कोमल हैं। महादेवी वर्मा का संपूर्ण काव्य गीतिकाव्य है। चित्र शैली और प्रगीत शैली उनके गीतिकाव्य की मुख्य शैलियां हैं।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गीति–काव्य की विशिष्टता बताते हुए कहा है कि "गीति–काव्य उस नई कविता का नाम है, जिसमें प्रकृत्ति के साधारण–असाधारण सब रूपों पर प्रेम–दृष्टि डालकर, उसके रहस्य भरे सच्चे संकेतों को परखकर, भाषा को चित्रमय, सजीव और मार्मिक रूप देकर कविता का एक कृत्रिम, स्वच्छंद मार्ग निकाला गया है। यह सर्वाधिक अन्तर्भाव व्यंजक होता है।"

वेदना, प्रकृति के सुंदर दृश्य चित्र, दिव्य प्रेम, विरह, हर्ष, विषाद, सुख–दुख की अनुभूतियाँ, आत्मा–परमात्मा के मधुर संबंध के साथ ही उनकी कविताओं में संवेदना का प्रबल भाव देखने को मिलता है।

महादेवी जी की गद्य कृतियाँ इस प्रकार हैं :

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ

ललित निबंध : क्षणदा

संस्मरण : पथ के साथी और मेरा परिवार और संस्मरण

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण

निबंध : श्रृंखला की कड़ियाँ, विवेचनात्मक गद्य, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध एवं संकल्पिता

संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय

संपादन : चाँद, आधुनिक कवि काव्यमाला आदि।

आलोचना : विभिन्न काव्य संग्रहों की भूमिकाएँ, हिंदी का विवेचनात्मक गद्य।

महादेवी जी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उन्होंने जो गद्य लिखा है, वह गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का संपूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना का सहारा लिए महादेवी जी ने जो सामाजिक जीवन को छूने वाले गद्य लिखे हैं वे उन्हें पढ़कर ही जाना जा सकता है।

महादेवी जी के जीवन पर महात्मा गाँधी का तथा कला–साहित्य साधना पर रविंद्रनाथ टैगोर का गहरा प्रभाव पड़ा और इसलिए उनके रचित साहित्य में करुणा और भावुकता का गहरा प्रभाव रहा। उनके पात्रों में कथात्मकता से अधिक संवेदनशीलता है और उनकी यही खूबी पाठक को रचना के साथ–साथ चलने पर मजबूर कर देती है।

महादेवी जी की गद्य शैली चित्रात्मक एवं प्रभावपूर्ण है। महादेवी वर्मा जी के गद्य साहित्य में समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है। समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं भेदभाव को आईना दिखाते हुए, उनका समाज से परिचय कराया है।

महादेवी वर्मा जी ने गद्य साहित्य में समाज के पिछड़े समाज के पात्रों का भी अत्यंत सजीव एवं मार्मिक चित्रण है। वह पशु पक्षियों से भी बहुत प्रेम करती थी और उनकी रचनाओं में उन्होंने बहुत ही सुंदरता से उन सभी का वर्णन किया है। उन्होंने अपने घर में भी कुत्ते, बिल्ली, गाय, गिलहरी, नेवला आदि को पाला हुआ था।

उन्होंने लिखा है, "मेरे शब्दचित्रों का आरम्भ बहुत गद्यात्मक और बचपन का है। मेरा पशु–पक्षियों का प्रेम तो जन्मजात था, अतः क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज के छात्रावास में मुझे उन्हीं का अभाव कष्ट देता था। हमारे स्कूल के आम के बाग़ में रहने वाली खटकिन ने कुछ मुर्गियां पाल रखी थीं। जिनके छोटे बच्चों को मैं प्रतिदिन दाना देती और गिनती थी। एक दिन एक बच्चा कम निकला और पूछने पर ज्ञात हुआ कि हमारी नई अध्यापिका उसे मारकर खाने के लिए ले गई है। अन्त में मेरे रोने–धोने और कुछ न खाने के कारण वह मुझे वापस मिल गया। तब मेरे बालकपन ने सोचा कि सब मुर्गी के बच्चों की पहचान रखी जावे, अन्यथा कोई और उठा ले जाएगा। तब मैंने पंजों का, चोंच का और आंखों का रंग, पंखों की संख्या आदि एक पुस्तिका में लिखी। फिर सबके नाम रखे और प्रतिदिन सबको गिनना आरम्भ किया। इस प्रकार मेरे रेखाचित्रों का आरम्भ हुआ, जो मेरे पशु–पक्षियों के परिवार में पल्लवित हुआ है। फिर एक ऐसे नौकर को देखा जिसे उसकी स्वामिनी ने निकाल दिया था। पर वह बच्चों के प्रेम के कारण कभी बताशे, कभी फल लेकर बाहर बच्चों की प्रतीक्षा में बैठा रहता था। उसे देखकर मुझे अपना बचपन का सेवक रामा याद आ गया और उसका शब्दचित्र लिखा।"

सारे रेखाचित्रों में स्वामी भक्ति, बंधुप्रेम, गुरुभक्ति, समर्पण, वात्सल्य आदि गुणों की प्रमुखता दिखाई देती हैं। सभी पात्रों का चित्रण यथार्थ जीवन से संबधित हैं। रेखाचित्रों के सभी पात्रों का वर्णन महादेवी ने इस खुबी से किया है कि इन पात्रों का संपूर्ण चित्र जीवंत रूप में हु–ब–हू चित्रित किया है। उनका सभी के साथ निकटतम संबंध रहा है

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों का उद्देश्य मनुष्य के हृदय में करूणा उत्पन्न कराना रहा है 'रामा', 'घीसा', 'अंधा अलोपी', 'बदलू कुम्हार, चीनी फेरीवाला', जंगबहादुर', ठकुरी बाबा, ये सारे पात्र गरीब एवं असाहय हैं वे अनपढ़, गँवार और समाज के द्वारा पीड़ित है। उनका मानसिक एवं शारीरिक शोषण भी हुआ है आज भी समाज में कई पात्र इस रूप में दिखाई देते हैं । रेखाचित्र के पात्र मानवीय गुणों से परिपूर्ण हैं। वे अनपढ़ सापंत्तिक स्थिति से अत्यंत गरीब होते हुए भी कार्यकुशल, कर्तव्यपरायण, ईमानदार हैं। ये सारे पात्र स्वामीभक्ति, त्याग, कर्मठता, करूणा से भरे हैं।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में समाज के उग्र रूप का भी अंकन किया है आज भी समाज में कई लोग बेटा और बेटी को समान रूप में मानने के लिए तैयार नहीं है। कई लोग बेटे को ही सर्वश्रेष्ठ, कुलदीपक मानते है। उसे ही पढ़ाया जाता है। लड़की को पराया धन समझा जाता है। उन्होंने महादेवी ने बेटा–बेटी के इस भेदभाव को दूर करने की कोशिश की है

महादेवी वर्मा ने समाज में अनादि काल से चले आए अमीर–गरीब के भेदभावों को रेखाचित्रों में अंकित किया है। आज भी अमीर–गरीब का भेद मिटाए नहीं मिटता उच्चवर्ग के बच्चे पब्लिक स्कूलों तथा अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ते हैं, किंतु कई गरीब बच्चे प्राथमिक शिक्षा से भी वंचित हैं। 'घीसा' पढ़ना चाहता है परंतु उसके पास धन नहीं है । 'मुन्नू' के साथ गाँव के सभी बच्चे पढ़ना चाहते हैं, लेकिन अमीर लोग किसी भी प्रकार की सहायता करने के लिए तैयार नहीं है। 'जंगिया', 'धनिया' अत्यंत करूण पात्र है पर्वतीय प्रदेशों में रहने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति गंभीर है धनिक लोग सैंकडों मीलों की यात्रा मोटरों, रेलगाडी, हवाई जहाज आदि से सुखर बनाते हैं। साथ ही दूसरों को दुख देकर अथवा उनके परिश्रम पर भी ये सुख प्राप्त करते हैं। आज प्रत्येक क्षेत्र में छीना–कपटी, कामचोरी का बोलबाला है जंगिया और धनिया दरिद्र होते हुए भी अपने कर्तव्य एवं सदाचार के कारण चमकते रहे हैं। दोनो में प्रातः पहले उठने की होड़ इसलिए लगी रहती है कि अधिक वजनवाला बोझ अपने जिम्मे कर ले। महादेवी ने रेखाचित्रों में असहाय, दीन–हीन, दलित, पीडित, अपाहिज अनाथ, महिला वर्ग आदि का चित्रण प्रभावी रूप में किया है।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों में धोबी, काछी, ब्राह्मण कुमहार जातियों का अंकन किया हैं। अशिक्षा के कारण इनमें अज्ञान है। ये सभी जातियाँ उपेक्षित रही हैं। समाज द्वारा उनका शोषण होता रहा। वे अंधश्रद्धा से जुड़े हुए दिखाई देते है लेखिका सामाजिक समानता, ऐक्य की प्रेरक रही है। महादेवी ने उनकी वेदना को अपनी वेदना समझा है। 'बदलू', 'अंधा अलोपी', 'घीसा', 'मुन्नू' आदि रेखाचित्र इस श्रेणी में आते हैं। ये सभी अपने अधिकारों से वंचित है ।

हमारा देश वैसे तो स्त्री जाति का पूरा सम्मान करता है लेकिन असलीयत में उसकी सीमा से अधिक उपेक्षा कर रहा है। इसलिए नारी को जागृत करने की पूरी कोशिश महादेवी ने अपने रेखाचित्रों में की है । समाज नारी की स्थिति, उसके विविध गुण, नारी की वेदना, विधवा के लिए सामाजिक विषमताएँ, बहुविवाह प्रथा तथा पीड़ित नारी की वेदनाओं के लिए रेखाचित्र पढ़नीय हैं। नारी समाज की गंभीर से गंभीर समस्याओं को उखाड़कर रखना महादेवी का प्रमुख लक्ष्य रहा है

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित नारी पात्रों के अध्ययन के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत नारी पात्र निम्न वर्ग के हैं। नारी वर्ग की स्थिति दयनीय है । समाज ने हमेशा नारी को ही दोषी ठहराया है। उसके साथ पक्षपात किया है। 'भक्तिन', 'लछमा', पक्षपाती समाजव्यवस्था एवं मान्यताओं का विरोध करती है।

समाज उसे चरित्रहीन मानता है। 'बिबिया' को चरित्रहीन समझा जाता है। उसे किसी भी घर में आदर का स्थान प्राप्त नहीं होता, वह अपने अस्तित्त्व के लिए झगडती है 'भाभी', 'बिंदा', 'अभागी स्त्री', 'लछमा', अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं। 'भक्तिन' 'लछमा', अपने अधिकारों को पाने के लिए संघर्ष करती हैं। 'बिबिया' मदयपि पति का विरोध करती है। अनेक कठिनाइयों तथा मानसिक शारीरिक यातनाओं के बावजूद भी इन नारियों के मन में जीवन के प्रति आसक्ति बनी हुई हैं।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में बाल–विवाह प्रथा को उजागर किया है। बिना जानने–समझने की उम्र में ही 'बालिका माँ' तथा 'बिबिया' का बाल–विवाह हुआ है अनजाने पति की मृत्यु के कारण उन्हें वैधव्य प्राप्त होता है। समाज में विधवा नारी का कोई मूल्य नहीं होता । समाज उसकी ओर हीन दृष्टि से देखता है। उसे हर तरह कमजोर करने की कोशिश करता है । 'बिट्टी', 'बिबिया' का पुनर्विवाह होता है लेकिन उन्हें उस घर में भी इज्जत नहीं मिलती । उनपर अनेक प्रतिबंध लगाए जाते हैं रेखाचित्रों में लेखिका ने विवाहित नारियों की दास्तान की पोल खोल दी है।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में से अनेक पात्र विमाता द्वारा पीड़ित हैं । विमाता के अत्याचारों को 'रामा', 'बिंदा', 'चीनी फेरीवाला', पशु की तरह चुपचाप सहते हैं इनमे से कुछ विमाता के अत्याचारों से दूर भागकर अनाथ बनकर जीवन जीते हैं उनका जीवन ही संघर्षमय बन जाता है । विमाता के अत्याचारों के कारण ही 'चीनी फेरीवाला' की बहन को कुमार्ग पर चलने के लिए विवश होना पड़ता है नारियाँ समाज का अंग होते हुए भी अशिक्षित एवं निम्न जाति की होने के कारण समाज उनकी ओर अलग दृष्टि से देखता है । महादेवी वर्मा का असाधारण प्रेम और सहानुभूति न केवल उपेक्षिताओं, परित्यक्ताओं, विधवाओं और अवैध संतानवाली माताओं के प्रति जागृत हुई, अपितु वेश्याओं के प्रति उनकी सद्भावना रही है। जिनके जिंदगी के मूल्य नित्य घटते–बढ़ते रहते हैं ।

रेखाचित्रों में चित्रित नारी कर्तव्यपरायण दिखाई देती है। पति के प्रति उसमें अनन्य प्रेम और विश्वास की भावना है। किसी भी हालत में वह अपने पति का साथ नहीं छोड़ना चाहती। वह अपने परिवार के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है। ये नारियाँ अपने अस्तित्त्व के प्रति स्वतंत्रता की भावना से जागृत दिखाई देती हैं। रेखाचित्रों में हमें नारी के विविध पहलुओं के दर्शन होते हैं। समाज में विवाह संस्था का अपना ही महत्त्व रहा है। रेखाचित्रों में बाल–विवाह, बहु–विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम–विवाह एवं अंतर्जातिय विवाह का अंकन दिखाई देता है । महादेवी ने इन रेखाचित्रों के माध्यम से नारी जीवन की कथा व्यथा को वाणी देने का काम किया है।

महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में अपने समकालीन साहित्यकारों का चित्रण भी किया है । उनकी आर्थिक स्थिति को समाज के सामने उजागर किया है। इन्हीं साहित्यकारों के प्रति उनके मन में श्रद्धाभाव है। साहित्यकारों में उदारता, करूणा, कर्मठता, स्नेह, सहनशीलता आदि गुण दिखाई देते हैं। उन्होंने इन गुणों से संपन्न साहित्यकारों के पारिवारिक जीवन एवं व्यक्तित्व का चित्रण किया है। रेखाचित्रों में पशु–पक्षियों का भी चित्रण किया है। समाज जीवन से इनका घनिष्ठ संबंध रहा है । हर समय उन्होंने समाज की मद्द की है। ये पशु–पक्षी मनुष्य के एकांत के समय सुख का आधार बन गए हैं।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। ग्रामीण लोग गरीब होते हैं, उनका रहन–सहन सीधा–सादा होता है परंतु वे अक्षय गुणों के भांडार होते हैं। उनका जीवन अभावों से भरा हुआ होता है । ग्रामीण समाज में नारी की स्थिति अच्छी नहीं होती। उसका पारीवारिक एवं सामाजिक शोषण होता है। फिर भी वह पतिव्रता होती है। ग्रामीण लोग रूढ़ि– परंपरा के कट्टर अनुयायी होते हैं। उनमें पूजापाठ अंध विश्वास, जाति–भेद की भावनाएँ दिखाई देती हैं। इन सभी बातों के लिए महादेवी ने अशिक्षा को ही कारण कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि महादेवी वर्मा के बिना आधुनिक हिन्दी साहित्य का उल्लेख हमेशा अधूरा ही होगा और हिन्दी साहित्य जगत में महादेवी जी ध्रुव तारे की भाँति सदा ही चमकती रहेंगी।

संदर्भ –

1. छायावादी काव्य तथा छायावादोत्तर काव्य , पृष्ठ 5
2. आधुनिक काव्य विवेचन मानविकी विद्यापीठ , पृष्ठ 117
3. छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि , सुषमा पॉल
4. महादेवी का काव्य में लालित्य विधान , डॉ . मनोरमा शर्मा साहित्य संस्थान , कानपुर , पृष्ठ सं .1976
5. छायावाद का काव्य शिल्प , प्रतिमा कृष्ण बल राधा कृष्ण प्रकाशन , दिल्ली 1971
6. आधुनिक हिन्दी कविता , डॉ . नंद किशोर नवल